© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

# प्राचीन भारत में आहत सिक्कों का अध्ययन

**डॉ0 मनोज कुमार सिंह**
अतिथि प्रवक्ता,
प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

ईसा–पूर्व 525 के आस–पास की घटना है। कोशल देश की राजधानी श्रावस्ती गोंडा जिला, (उत्तर प्रदेश) का गृहपति अनाथपिंडक भगवान बुद्ध के भिक्षु–संघ के लिए एक विहार बनवाना चाहता था। उसके लिए उसे राजकुमार जेत के उद्यान की भूमि अनुकूल लगी। जाकर जेत से कहा– ''आर्यपुत्र! मुझे संघाराम बनाने के लिए अपना उद्यान दीजिए।''

जेत कुमार ने कहा – ''कार्षापणों को कोर से कोर लगाकर (कोटिसंथारेन) बिछाने से भी वह उद्यान अदेय है।''

अनाथपिंडक ने कहा– ''मैंने उद्यान ले लिया।''

जेत कुमार ने कहा– ''तुमने उद्यान नहीं लिया।''

बिका या नहीं बिका, इसके बारे में न्यायपतियों से पूछा गया, तो उन्होंने निर्णय दिया– ''अनाथपिंडक ने उद्यान को खरीद लिया है।'' कार्षापणों को बैलगाड़ियों पर लदवाकर अनाथपिंडक जेतवन पहुँचा। वहाँ भूमि पर कार्षापणों को कोर से कोर मिलाकर बिछा दिया गया। जेतवन अनाथपिंडक का हो गया, जहाँ उसने भिक्षु संघ के लिए एक भव्य विहार का निर्माण करवाया। उपर्युक्त घटना पालि त्रिपिटक की एक सबसे पुरानी पुस्तक 'चुल्लवग्ग' की एक कथा पर आधारित है। यह कथा जातक निदान में भी आई है। वस्तुतः यह घटना इतनी महत्वूपर्ण मानी गई कि इसे ईसा–पूर्व दूसरी सदी में बने भरहुत के स्तूप की वेष्टनी पर उत्कीर्ण कर दिया गया। इस शिल्पांकन के चौकोर सिक्कों पर जो लांछन या चिन्ह दिखाई देते हैं वे उपलब्ध हुए पंचमार्क यानी आहत सिक्कों के अनुरूप ही हैं। बुद्ध के समय में शहरीकरण का नया दौर चला, दूर–दूर के देशों के साथ व्यापार शुरू हुआ, इसलिए मुद्रा–प्राचीन का अस्तित्व में आना स्वाभाविक ही था। पाणिनी की अष्टाध्यायी[1] में भी प्रणाली भारतीय मुद्राओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। वैदिक साहित्य में 'निष्क' भले ही सुवर्ण–खण्ड या आभूषण रहा हो, परंतु पाणिनी के समय (ईसा–पूर्व पाँचवी सदी) में वह बकायदा एक सिक्का था। अष्टाध्यायी में दो या तीन निष्कों से खरीददारी का उल्लेख है। पाणिनी जिन अन्य मुद्राओं का

उल्लेख करते हैं वे हैं–शतमान, शाण, कार्षापण, माष, विंशतिक और त्रिशंत्क। चाँदी के शतमान संभवतः 100 रत्ती–भार के थे। तक्षशिला से मुड़े हुए दंड (शलाका ) के आकार के जो सिक्के मिले हैं उन्हें शतमान माना गया है। सबसे अधिक प्रचलित सिक्के चांदी के लांछन–युक्त कार्षापण थे, जिनकी देश के विभिन्न भागों में अनेक निधियाँ मिली हैं। कार्षापण को संक्षेप में 'पण' भी कहा जाता था। बौद्ध जातकों में इसे 'कहापण' कहा गया है। चाँदी का मानक कार्षापण 32( रत्ती रत्तिका या गुंजा) यानी लगभग 58 ग्रेन या 3.8 ग्राम के बराबर माना गया था। आधे, चौथाई आदि कार्षापणों का भी प्रचलन था। दिनों दिन उपयोग की सस्ती चीजें खरीदने के लिए काकणी कौड़ी का इस्तेमाल होता था। कार्षापण और माष चाँदी के अलावा ताँबे के भी बनते थे। भारत के इन प्राचीनतम सिक्कों पर एक–एक करके जो लक्षण या चिन्ह पंच (आहत) किए जाते थे उन्हें पाणिनि ने 'रूप' कहा है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र[2] में पण, माषक तथा काकणी नामक वस्तुओं के बारे में जानकारी है। मुद्रा–अधिकारी को 'लक्षणाध्यक्ष' और लांछनों की जांच करने वाले को 'रूपदर्शक' कहा है। पतंजलि से कार्षापणों की जाँच करने वाले को 'रूपतर्क' कहा है। लांछन–युक्त रजत–मुद्रा को कौटिल्य ने 'रूप्यरूप' कहा है। कौटिल्य ने जाली सिक्के चलाने वाले को 'कूटरूपकारक' कहा है और उसी सन्दर्भ में जानकारी दी है कि उस जमाने के सिक्के किस तरह बनते थे। धातु को मूषा में गलाकर क्षार से साफ किया जाता था। उसके बाद उसे अधिकरीणी (निहाई) पर मुष्टिका (हथौड़ी) से पीटा जाता था। फिर संदंश यानी कतरनी से उसके टुकड़े बनाए जाते थे। अंत में बिबंटक (ठप्पे) से उन पर चिन्ह अंकित किए जाते थे। धातुखंड पर अधिकृत चिन्हों की छाप पड़ जाने पर ही वह मुद्रा का रूप धारण करता था। प्राचीन भारत में सांचों में भी सिक्के ढाले गये थे, मगर आगे सिक्कों का निर्माण अधिकतर ठप्पों से ही होता रहा। उपर्युक्त साहित्यिक प्रमाणों से निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि ईसा–पूर्व पाँचवी–चौथी सदियों में भारत में मुद्रा–व्यवस्था अच्छी तरह अस्तित्व में आ गई थी। अतः हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारत में सिक्कों का चलन 600 ई0 पू0 के आस–पास से आरंभ हुआ। उपलब्ध सिक्कों के अध्ययन से भी इसी तरह के निष्कर्ष निकलते हैं। तक्षशिला[3] के भिड़ जिले में 1924 ई0 में जो 1170 सिक्के मिले उनके आधार पर काफी महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं। इस निधि (दफीना या मुद्रा–संचय) में थे–1055 पंचमार्क सिक्के, 33 मुड़े हुए दंड के आकार के सिक्के 79 लघु–मुद्राएँ, 2 सिक्के (टेट्राद्रख्म) सिकंदर–महान के, एक सिक्का फिलिप एरिदेयूस का और एक हख़ामनी (ईरानी) 'सिग्लोस' मुद्रा। इनमें से चाँदी के तीन यूनानी सिक्के इस निधि का समय निर्धारित करने में बड़े सहायक सिद्ध हुए हैं। सिकंदर ने 326 ई0 पू0 में तत्कालीन पश्चिमोत्तर भारत पर हमला किया था। सिकन्दर के सौतेले भाई फिलिप एरिदेयूस को 317 ई0 पू0 में बंदी बनाकर उसकी हत्या कर दी गई थी। तक्षशिला की निधि में मिला उसका सिक्का इतना नया है कि जैसे टकसाल से निकालकर सीधे ही संचय में पहुँच गया हो। अतः मुद्राविद इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह मुद्रा–निधि 317 ई0 पू0 से बाद की

नहीं होनी चाहिए। इस निधि में चाँदी के जो पंचमार्क और मुड़े दंडाकर सिक्के मिले हैं वे काफी घिसे हुए है। इसलिए कहा जा सकता है कि वे ईसा–पूर्व चौथी सदी के पूर्वार्द्ध के हैं। काबुल–क्षेत्र के चमन–ई–हजूरी स्थान से मिली निधि में यूनानी नगर–राज्यों और हखामनी साम्राज्य के सिक्कों के साथ जो मुड़े दंडाकार सिक्के मिले हैं वे, पता चलता है कि, ईसा–पूर्व चौथी सदी के प्रथम चरण में चलन में थे। मुड़े दंड़ के आकार के चांदी के सिक्के तत्कालीन पश्चिमोत्तर भारत से ही मिले हैं। कुछ पुराविद इन्हें 'अष्टाध्यायी' में वर्णित शतमान सिक्के संभवतः 100 रत्ती यानी करीब 180 ग्रेन भार के थे। ईरानी 'सिग्लोई' करीब 85 ग्रेन भार के थे, इसलिए कुछ पुराविदों का मत है कि मुड़े दंडकार सिक्के दो 'सिग्लोई' के बराबर के हैं। इस संदर्भ में यह ध्यान में रखना जरूरी है कि गांधार प्रदेश पर हखामनी सम्राट द्वारा (दारयवहुः 521–486 ई0 पू0) का शासन रहा है। मुड़े दंड के आकार वाले सिक्कों के सिरों पर चक्र जैसे चिह्न आहत है। वस्तुतः चाँदी के ये दंड लम्बे है और इनके दोनों सिरों पर लांक्षन आहत किए गए हैं, इसीलिए ये मुड़ गए हैं। इस तरह के जो छोटे सिक्के मिले है वे मुझे हुए नहीं हैं। इनकी मुख्य विशेषता है, इन पर चक्र–नुमा चिन्ह अंकित होना। इसलिए इन्हें 'चक्रांकित मुद्रा' भी कहा जाता है। इन्हें ही भारत के सबसे पुराने सिक्के माना जाता है, और पश्चिमोत्तर भारत में इनका प्रचलन ईसा–पूर्व पाँचवीं सदी के आरंभ से सिकंदर के हमले तक रहा है।[4] मुड़े दंड की चक्रांकित मुद्राओं के अलावा भारत के विभिन्न भागों से सामान्य पंचमार्क (आहत) मुद्राओं की ऐसी अनेक निधियाँ मिली हैं जो मौर्य काल के पहले की हैं। इन पंचमार्क सिक्कों का संबंध बुद्धकालीन महाजनपदों से जोड़ा जाता है। कोशल, काशी, पंचाल, वत्स, शूरसेन आदि जनपदों के इन सिक्कों की अपनी अलग–अलग विशेषताएँ हैं, इसलिए इन्हें 'स्थानिक सिक्के' भी कहा जाता है। इन सभी सिक्कों के पुरोभाग (चित भाग) पर विभिन्न प्रकार के जो चिन्ह पंच किए गए हैं वे टकसालों के हैं। बाद में पृष्ठभाग पर (पट भाग) पर भी चिन्ह अंकित किए जाने लगे, जो सर्राफ या पारखी (रूपदर्शक) के होंगे। स्थानिक सिक्कों में सबसे पुराने सिक्के संभवतः कोशल के हैं। उत्तर प्रदेश के खीरी जिले के पैला गाँव से 1912 ई0 में चाँदी के जो 1245 पंचमार्क सिक्के मिले थे वे कोशल के ही हैं। इनके पुरोभाग पर चार चिन्ह अंकित हैं। पहला चिन्ह तीन दौड़ते कदमों से बना एक त्रिभुज है और उसके बीच में एक बिंदी है। दूसरा चिन्ह बैल के चेहरे की तरह का है और ब्राह्मी के 'म' अक्षर की तरह दिखाई देता है। तीसरा चिन्ह तीन रूपों में दिखाई देता है– षड्कोण, चंद्र–सूर्य और हाथी। चौथे चिन्ह के कई प्रकार हैं। प्रो0 दामोदर धर्मानंद कोसंबी ने पैला–निधि[5] के इन पंचमार्क सिक्कों का अन्वेषण किया है। उनका मत है कि इन पर तीसरा चिन्ह कोशल के तीन राजकुलों का और चौथा चिन्ह शासन करने वाले राजा का सूचक है। पैला–निधि के ये पंचमार्क सिक्के 24 रत्ती भार के हैं। जबकि बाद के पाँच चिन्हों वाले मानक कार्षापण पंचमार्क सिक्के औसतन 32 रत्ती भार के हैं। प्रत्येक जनपद के ये स्थानित सिक्के, बनावट, वजन, चिन्ह, धातु आदि के मामले में एक–दूसरे से काफी भिन्न है, इसलिए इनका अभी तक

सम्यक अध्ययन नहीं हो पाया हैं। कुछ स्थानिक सिक्कों पर केवल एक ही लांछन देखने को मिलता है, जिससे वह सिक्का एक छोटी कटोरी के आकार का बन गया है। अलग–अलग जनपदों के सिक्कों पर अलग–अलग आकृतियाँ अंकित हैं। मगध में भी आरंभ में स्थानिक सिक्कों का ही प्रचलन रहा। परन्तु जब से साम्राज्य–विस्तार का युग शुरू हुआ, तब से एक नई मुद्रा–व्यवस्था अस्तित्व में आई। नए पंचमार्क सिक्के 32 रत्ती भार के हैं। और इन पर पाँच चिन्ह अंकित हैं। अजातशत्रु के समय से लेकर मौर्य साम्राज्य के अंत समय तक इस तरह के सिक्के जारी किए जाते रहे हैं।

**संदर्भ और टिप्पणियाँ :**

1. पाणिनि की अष्टाध्यायी : व्याकरण वेदांग का विषय नाम से ही स्पष्ट व्याकरण के महान् आचार्य पाणिनी ईसा पूर्व चौथी सदी में हुए। उनकी अष्टाध्यायी भारतीय साहित्य की अमर कृति है। अष्टाध्यायी में ताँबे का कार्षापण और चाँदी का पण दोनों के नाम मिलते हैं। पाणिनी ने विंशातिक और त्रिंशत्क सिक्कों का संकेत किया है।
2. कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजतंत्र और इसके संचालन के बारे में मुख्य श्रोत–सामग्री मिलती है, उसे अर्थशास्त्र कहते हैं। तक्षशिला की विधियों से पता चलता है कि फिर मगधीय व्यापार और मुद्रा का प्रभुत्व स्थापित हो गया।
3. तक्षशिला (जिला रावलपिंड़ी, पाकिस्तान) : तक्षशिला गांधार देश की राजधानी थी। बाल्मीकि रामायण के अनुसार गंधर्व देश पर भारत ने अपने मामा युधाजित के कहने पर आक्रमण किया और हराया और इस देश के पूर्वी और पश्चिमी भागों में तक्षशिला और पुष्कलावत नगरों को अपने पुत्र तक्ष और पुष्कल के नाम पर बसाया था।
4. B.N. Mukherjee and P.K.D. Lee,Technology of India Coinage, Indian Museum, Kolkatta 1988,
5. पैला निधि : उत्तर प्रदेश के खीरी जिले के पैला गाँव से प्राप्त सिक्कों का अध्ययन डॉ0 डी.डी. कौसंबी ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया है। उनके अनुसार ये सिक्के भार व चिन्हों (चार चिन्ह) में अन्य सिक्कों से अलग थे। संभवतः ये सिक्के कोशल के ज्ञात होते है। इससे ये पता चलता है कि खीरी जिला कोशल जनपद में रहा होगा।
6. गुणाकार मुले, भारतीय सिक्कों का इतिहास, पृ0 37 वर्ष 2010।